B.A. (Hons) Part I

Philosophy - Paper I

Topic - महात्मा बुद्ध का प्रथम एवं द्वितीय आर्य सत्य।

Dr. Sachidanand Prasad.
R. R. S. College, Mokama.

वेद में अविश्वास करने के कारण बौद्ध दर्शन एक नास्तिक दर्शन है। बौद्ध दर्शन का प्रारम्भ दुःख से होता है। महात्मा बुद्ध ने कहा है कि जन्म लेना ही दुःख का कारण है। मनुष्य को अपने जीवन में अनेकों प्रकार के दुःखों को झेलना पड़ता है। महात्मा बुद्ध ने अपने प्रथम आर्य सत्य में यही बतलाया है कि सर्वः दुःखः दुःखम्। कहने का अर्थ है कि रोग, बुढ़ापा, मृत्यु, चिन्ता, असंतोष शोक इत्यादि अनेकों दुःख है। बौद्ध दर्शन के अनुसार पंचस्कन्ध दुःखमय है। शरीर, अनुभूति, प्रत्यक्ष, इच्छा एवं विचार को बौद्ध दर्शन में 'पंचस्कन्ध' कहा गया है। चूँकि बौद्ध दर्शन दुःखों पर ज्यादा बल देता है इसलिए कुछ विद्वानों ने बौद्ध दर्शन को निराशावादी दर्शन कहते है परन्तु बौद्ध दर्शन को

निराशावादी कहना उचित नहीं है क्योंकि बौद्ध दर्शन का आरम्भ तो दुःख से होता है परन्तु उसका अंत सुख मे होता है। बौद्ध दर्शन मे दुःख के कारणों को खोजने का प्रयास किया जाता है। बौद्ध दर्शन के द्वितीय आर्य सत्य मे दुःख का कारण बतलाया गया है। बौद्ध दर्शन मे दुःख के 12 कारण बतलाये गये है। जरामरण, जाति, भव, उपादान, तृष्णा, वेदना, स्पर्श, षडायतन, नामरूप, विज्ञान, संस्कार, अविद्या। बौद्ध दर्शन मे अविद्या को दुःख का मूल कारण माना गया है। बौद्ध दर्शन कार्य-कारण के सिद्धान्त को मानते हुए 'प्रतीत्यसमुत्पाद' सिद्धान्त की व्याख्या करता है। प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक घटना का कोई न कोई कारण होता है। चूंकि दुःख भी एक घटना है इसलिए दुःख के भी कारण है। उदाहरण के लिए बौद्ध दर्शन मे दुःख को

जरा मरण कहा जाता है। जरा का अर्थ— वृद्धावस्था और मरण का अर्थ मृत्यु होता है। जरा मरण के अन्तर्गत समस्त दुःख जैसे - शोक, निराशा, शोक इत्यादि आता है। बौद्ध दर्शन के अनुसार जरा मरण का कारण जाति या जन्मलेना है। क्योंकि यदि मनुष्य जन्म नही लेता तो इस संसार के विभिन्न दुःखो का सहना नहीं करना पड़ता। बौद्ध दर्शन के अनुसार जाति का कारण भव है। मानव का जन्म इसलिए होता है क्योंकि मनुष्य जन्म लेना चाहता है। बौद्ध दर्शन के अनुसार भव का कारण उपादान है। सांसारिक वस्तुओं से आशक्त रहने की इच्छा को उपादान कहते है। बौद्ध दर्शन के अनुसार उपादान का कारण तृष्णा है। तृष्णा के कारण ही मनुष्य सांसारिक विषयों के पीछे भागता है। बौद्धदर्शन के अनुसार तृष्णा का कारण वेदना है। पूर्व इन्द्रियानुभूति को वेदना कहते है। हमारी इन्द्रियों को पहले की

अनुभूति याद रहती है इसलिए हमारे अन्दर तृष्णा बनी रहती है। बौद्ध दर्शन के अनुसार वेदना का कारण 'स्पर्श' को माना गया है। हमारी इंद्रियों का वस्तुओं के साथ जब सम्पर्क होता है तो उसे 'स्पर्श' कहते हैं। बौद्ध दर्शन के अनुसार स्पर्श का कारण 'षडायतन' है। हमारी पाँच ज्ञानेन्द्रियों और मन को षडायतन कहा जाता है। बौद्ध दर्शन के अनुसार षडायतन का कारण नाम-रूप है। मन और शरीर के समूह को नाम-रूप कहते हैं। बौद्ध दर्शन के अनुसार नाम-रूप का कारण 'विज्ञान' है। विज्ञान का अर्थ है consciousness. माँ के गर्भ में consciousness के कारण ही शरीर एवं ज्ञान का विकास बच्चों में होता है। बौद्ध दर्शन के अनुसार विज्ञान का कारण 'संस्कार' है। मनुष्य में पूर्व जन्म के कर्म के अनुसार संस्कार बनता है। बौद्ध दर्शन ने संस्कार का कारण 'अविद्या' को

माना है। वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को नहीं जानना ही अविद्या है। बौद्ध दर्शन के अनुसार अविद्या ही दुःखों का मूल कारण है। बौद्ध दर्शन के प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त की आलोचना करते हुए आलोचकों का कहना है कि यह सिद्धान्त उपनिषद के 'ब्रह्म-चक्र' की नकल है। फिर आलोचकों का कहना है कि अविद्या का कारण क्या है इसका जवाब बौद्ध दर्शन नहीं दे पाता है। प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त का बौद्ध दर्शन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। बौद्ध दर्शन में इसी सिद्धान्त के आधार पर 'कर्मवाद' की स्थापना हुई है। यहाँ बतलाया गया है कि हमारा वर्तमान जीवन पूर्व जन्म के कर्मों का फल है और भविष्य जीवन वर्तमान जीवन के कर्मों का फल होगा। बौद्ध दर्शन एक 'अनात्मवादी' दर्शन है क्योंकि यह मानता है कि जब संसार की सभी चीजें क्षणिक है तो स्थाई आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया जाता।